



www.agrabharat.in

नई सोच का अखबार



दैनिक हिन्दी समाचार पत्र

वर्ष: 19

अंक: 102

आगरा, मंगलवार 29 सितम्बर 2026

पृष्ठ: 8 मूल्य: 2.00 ₹.

अंबाला में निर्माणाधीन अवैध इमारत ढही, 6 मजदूरों की मौत

नामी बिल्डर पर लटकी कार्रवाई की तलवार

अंबाला(ए)। हरियाणा के अंबाला शहर के धूलकोट में एक निर्माणाधीन तीन मंजिला इमारत के अचानक भरभराकर गिरने से बड़ा हादसा हो गया है। इस दर्दनाक घटना में छह मजदूरों की मौत हो गई है, जबकि ग्यारह अन्य मजदूर गंभीर रूप से घायल हो गए हैं। इमारत के मलबे में कुल सत्रह मजदूर दब गए थे, जिन्हें निकालने के लिए राष्ट्रीय आपदा प्रतिक्रिया बल (एनडीआरएफ) और राज्य आपदा प्रतिक्रिया बल (एसडीआरएफ) की टीमों ने तुरंत बचाव अभियान चलाया। सूत्रों के अनुसार, यह इलाका नॉन-कंस्ट्रक्शन जोन में आता है, जहां निर्माण की अनुमति नहीं है। अंबाला के एक बड़े और नामी बिल्डर का नाम इस अवैध निर्माण से जुड़ रहा है, जिस पर पुलिस की जांच केंद्रित है।

अंबाला की मुख्य चिकित्सा अधिकारी रेणु पांजनी ने बताया कि सुबह हुई इस घटना के तुरंत बाद घायलों को अंबाला शहर के नगरिक अस्पताल लाया गया। अस्पताल में लाए गए चार मजदूरों को चिकित्सकों ने मृत घोषित कर दिया था, जबकि उपचार के दौरान



दो अन्य घायलों ने भी दम तोड़ दिया, जिससे मृतकों की कुल संख्या छह हो गई। सात मजदूरों को प्राथमिक उपचार के बाद छुट्टी दे दी गई है, जबकि पांच घायलों का अभी भी अस्पताल में इलाज चल रहा है। अस्पताल प्रशासन ने किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए अपनी पूरी टीम को अलर्ट पर रखा है।

घटना की सूचना मिलते ही अंबाला के पुलिस अधीक्षक अजीत सिंह शेखावत मौके पर पहुंचे और स्थिति का जायजा लिया। उन्होंने मीडिया को बताया कि बचाव कार्य तेजी से जारी है और मलबे में फंसे किसी भी मजदूर को बचाने के लिए जिला प्रशासन पूरी मदद में जुटा हुआ है। एसपी ने स्पष्ट

किया कि यह एक निर्माणाधीन इमारत थी और इस हादसे में हुई मौतों तथा घायलों को देखते हुए कानूनी कार्रवाई निश्चित रूप से की जाएगी। उन्होंने कहा कि निर्माण अवैध था या लापरवाही बरती गई, हर पहलू से जांच की जाएगी और बिल्डर व अन्य संबंधित व्यक्तियों पर शिकंजा कसा जाएगा। यहां काम

करने वाले ज्यादातर मजदूर जंडली और आसपास के रहने वाले हैं।हादसे में जान गवाने वालों में मिस्त्री राजेंद्र (50) निवासी जलबेड़ा, शास्त्री (50) निवासी गरनाला, कालिया (50) निवासी बाराबकी उत्तर प्रदेश और रूप सिंह (55) निवासी गांव डंगंडेरा लालड़ू, पंजाब शामिल हैं। देर रात बचाव अभियान के दौरान मलकीत सिंह (55) का शव भी निकाला गया, जो पंजाब के लालड़ू के गांव डंगंडेरा के रहने वाले पूर्व सैनिक थे और साइट सुपरवाइजर के तौर पर काम कर रहे थे। घायलों में सिया राम (गोंडा उत्तर प्रदेश), सतीश (पूरुणिया बिहार), बलिनंदर (धुरकड़ा मूल निवासी जौंद, फुल्लो कुमार (लखीसराय बिहार), अशोक (सेठी एनक्लेव अंबाला शहर), वेद प्रकाश (गरनाला), दो भाई बृजेश व राजेश (लखनऊ उत्तर प्रदेश), मंतोष (गोवाला शेखपुरा पटना बिहार), रामगोपाल (निरंजनपुर अयोध्या उत्तर प्रदेश), राजेश (मोहम्मदपुर लखनऊ) और रुपेश कुमार (पूरुणया बिहार) जैसे मजदूर शामिल हैं।

जंतर-मंतर आंदोलन संभालने का भी दावा: दीपके के गुरु कौन हैं? सीजेपी में पर्दे के पीछे बड़ी

नई दिल्ली (ए)। काँकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) के संस्थापक और राष्ट्रीय संयोजक अभिजीत दीपके के राजनीतिक मार्गदर्शक को लेकर चर्चा तेज हो गई है। एक वीडियो कॉल की सामने आई बातचीत में सीजेपी के सह संयोजक आशुतोष रांका और खुद अभिजीत दीपके ने बताया कि आजिंक्य शिंदे लंबे समय से दीपके के मेंटर रहे हैं। दोनों के मुताबिक, शिंदे पार्टी के गठन से पहले भी दीपके को सलाह देते रहे हैं और अब संगठन में भी अहम भूमिका निभा रहे हैं।

वीडियो में रांका ने कहा कि आजिंक्य शिंदे, दीपके के सीजेपी में आने से पहले से ही उनके मेंटर हैं। उन्होंने नीट पेपर लीक के खिलाफ जंतर-मंतर पर हुए आंदोलन में शिंदे की भूमिका का जिक्र किया। रांका के मुताबिक, मंच पर दीपके और अन्य नेता लोगों से संवाद कर रहे थे, जबकि प्रदर्शन के प्रबंधन की जिम्मेदारी शिंदे खुद संभाल रहे थे। दीपके ने भी शिंदे की भूमिका को लेकर रांका की बात से सहमत जाहिर की है। उन्होंने कहा कि आंदोलन के दौरान शिंदे ने वॉलेंटियर्स की टीम तैयार करने,



बीड के प्रबंधन और पूरे कार्यक्रम की व्यवस्था संभालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। दीपके के मुताबिक, इसी आंदोलन के दौरान देशभर में काम करने वाली वॉलेंटियर्स की टीम तैयार हुई। **कौन है आजिंक्य शिंदे?** आजिंक्य शिंदे पहले आम आदमी पार्टी (आप) से जुड़े रहे हैं। महाराष्ट्र में वह पार्टी की युवा इकाई में जिम्मेदारी संभाल चुके हैं और गोवा के सह-प्रभारी भी रहे हैं। बाद में उन्होंने सीजेपी का रुख किया। सीजेपी में शिंदे को राष्ट्रीय संगठन

की जिम्मेदारी दी गई है। पार्टी के विस्तार और संगठनात्मक गतिविधियों में उनकी भूमिका अहम है। दीपके और शिंदे दोनों महाराष्ट्र से आते हैं और लंबे समय से एक-दूसरे को जानते हैं। पार्टी से जुड़े लोगों के अनुसार, शिंदे सार्वजनिक तौर पर कम नजर आते हैं और संगठनात्मक रणनीति तथा जमीनी गतिविधियों पर ज्यादा ध्यान देते हैं। इसी वजह से सीजेपी में महत्वपूर्ण जिम्मेदारी होने के बावजूद उनकी सार्वजनिक पहचान अपेक्षाकृत सीमित है।

ओडिशा में बाढ़ का कहर, मुख्यमंत्री ने किया हवाई सर्वेक्षण, 13 जिलों में जलभराव, 1 लाख से अधिक लोगों को सुरक्षित निकाला

भुवनेश्वर (ए)। ओडिशा में बाढ़ की स्थिति गंभीर बनी हुई है। मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने राज्य के बाढ़ प्रभावित इलाकों का हवाई सर्वेक्षण किया और अधिकारियों को तत्काल राहत व सहायता पहुंचाने के निर्देश दिए। बंगाल की खाड़ी में बने निम्न दबाव के कारण हुई भारी बारिश से राज्य के 13 जिलों में व्यापक जलभराव और बाढ़ की स्थिति उत्पन्न हो गई है, जिसके चलते एक लाख से अधिक लोगों को सुरक्षित स्थानों पर पहुंचाया गया है। अधिकारियों ने बताया कि दक्षिणी, तटीय और पश्चिमी ओडिशा के गंजाम, गजपति, मलकानगिरि, कोरापुट और नरेंद्रगढ़ सहित कई जिलों में बहुत भारी बारिश हुई है। निचले इलाकों से अब तक 1 लाख से अधिक लोगों को निकालकर 500 से ज्यादा राहत शिविरों में ठहराया गया है। अकेले बालासोर जिले में 67,266 लोगों को सुरक्षित स्थानों पर



पहुंचाया गया है, जहाँ 3.5 लाख से अधिक लोग बाढ़ से प्रभावित हुए हैं। मुख्यमंत्री माझी ने कोरापुट के प्रभावित इलाकों का निरीक्षण भी किया और स्थानीय लोगों से उनकी समस्याओं को समझा। इस बीच, महानदी में भी बाढ़ की चेतावनी जारी की गई है, जिससे डेल्टा क्षेत्र के पांच जिलों में गंभीर जलभराव का खतरा बढ़ गया है। अधिकारियों के अनुसार छत्तीसगढ़ में

महानदी के ऊपरी जलग्रहण क्षेत्रों में भारी बारिश के बाद हीराकुड जलाशय से अतिरिक्त पानी छोड़े जाने के कारण महानदी का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है। जल संसाधन विभाग ने एक अतिरिक्त दल तैयार किया कि रविवार तक महानदी से सात लाख क्यूसेक पानी कटक के पास मुंडली पहुंचेगा, जिसके सोमवार सुबह तक आठ लाख क्यूसेक तक पहुंचने की संभावना है।

मुख्य निर्वाचन आयुक्त के इस्तीफे का फर्जी पत्र वायरल

चुनाव आयोग ने बताई एक-एक बात कहा- एआई का कमाल

नई दिल्ली(ए)। भारत के मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग को लेकर जारी राजनीतिक घमासान के बीच एक पत्र वायरल हुआ है। इसमें दावा किया गया कि कुमार ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को पत्र लिखकर अपने पद से इस्तीफा देने की पेशकश की है। हालांकि, चुनाव आयोग ने इस पत्र को फर्जी करार देते हुए स्पष्ट किया है कि ऐसा कोई फैसला नहीं लिया गया है। यह घटनाक्रम ऐसे समय में हुआ है जब चुनाव आयोग के स्पेशल समरी रिवीजन (एसआईआर) प्रक्रिया और उसके काम करने के तरीकों पर सवाल उठ रहे हैं। वायरल पत्र में दावा किया गया था कि यह फैसला आत्मचिंतन और विचार के बाद लिया गया है, जिसमें देश की सेवा करने और निर्वाचन आयोग की निष्पक्षता को बनाए रखने का अवसर मिलने को सम्मानजनक बताया गया था।

चुनाव आयोग ने इस तथाकथित त्यागपत्र को फर्जी और एआई-जनरेटेड करार दिया है। आयोग के प्रवक्ता ने लोगों से ऐसे मनगढ़ंत पत्रों पर विश्वास न करने की अपील करते हुए साफ किया कि मुख्य निर्वाचन आयुक्त ने ऐसा कोई भी पत्र नहीं भेजा है। फर्जी वायरल लेटर में मुख्य चुनाव आयुक्त के हस्ताक्षर किए गए थे और यह राष्ट्रपति मुर्मू के नाम भेजा गया था। यह घटनाक्रम ऐसे समय में सामने आया है जब चुनाव आयोग में स्पेशल समरी रिवीजन प्रक्रिया को लेकर आंतरिक मतभेदों की खबरें सामने आई थीं। एक मीडिया रिपोर्ट में दावा किया गया था कि अन्य चुनाव आयुक्तों ने एसआईआर से जुड़े कई फैसलों और आदेशों पर आपत्ति जताई थी, क्योंकि ये उनकी जानकारी या सहमति के बिना जारी किए गए थे। रिपोर्ट में कहा गया था कि इन आपत्तियों में वैधानिक मतदाता पंजीकरण फॉर्म-6 में बदलाव, मतदाता सूची में नाम जोड़ने और हटाने की प्रक्रिया तथा मतदाता सूची के डेटाबेस पर केंद्रीकृत नियंत्रण से जुड़े मुद्दे शामिल थे। हालांकि, चुनाव आयोग ने इन मतभेदों से इनकार करते हुए कहा था कि सभी फैसले आपसी सहमति से लिए गए हैं और वैचारिक मतभेदों को टकराव नहीं माना जाना चाहिए। आयोग ने यह भी स्पष्ट किया था कि मतदाता सूची में बदलाव से संबंधित फॉर्म-6 को उच्चतम न्यायालय ने भी बरकरार रखा है। आयोग ने बताया कि हाल के महीनों में देशभर में एसआईआर समेत कई फैसले सर्वसम्मति से मंजूर किए गए हैं, जिसकी शुरुआत बिहार से हुई थी। इन रिपोर्टों के बाद कांग्रेस सहित विपक्षी दलों ने चुनाव आयोग के कामकाज पर सवाल उठाते हुए ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे की मांग की थी। विपक्ष ने इस मामले को सर्वोच्च न्यायालय ले जाने और एसआईआर प्रक्रिया पर रोक लगाने के साथ ही पुराने चुनावों को दोबारा करार जाने तक की मांग की थी। इस बीच, काँकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने भी ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे, एसआईआर प्रक्रिया को रोकने और उसकी जांच कराने सहित तीन प्रमुख मांगें रखी हैं। पार्टी ने इन मांगों को पूरा न होने पर आंदोलन की चेतावनी दी है और बैलेट पेपर से चुनाव कराने का भी समर्थन किया है।

एलपीयू में हिंसक छात्रों का प्रदर्शन शांत, एन-44

पर यातायात बहाल, कक्षाएं स्थगित

पटियाला (ए)। पंजाब के फगवाड़ा स्थित लबली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (एलपीयू) में छात्रों द्वारा परिसर में एक छात्रा से कथित दुकर्म के दावे को लेकर किए गए हिंसक प्रदर्शन के बाद राष्ट्रीय राजमार्ग-44 पर यातायात बहाल कर दिया गया है। करीब 15 घंटे तक चले अवरोध के बाद सोमवार सुबह स्थिति नियंत्रण में बताई जा रही है। विश्वविद्यालय ने अगले 10 दिनों के लिए कक्षाएं स्थगित कर दी हैं, जबकि मामले की जांच के लिए विशेष जांच दल (एसआईटी) का गठन किया गया है। फगवाड़ा के एलपीयू परिसर में रविवार को उस समय तनाव बढ़ गया जब छात्रों ने एक बाहरी व्यक्ति द्वारा एक छात्रा से दुकर्म के कथित दावे को लेकर तोड़फोड़ की और नई दिल्ली-अमृतसर राजमार्ग को अवरुद्ध कर दिया। जालंधर के पुलिस अिधिकारी ने पुष्टि की कि सोमवार मध्यरात्रि को यातायात बहाल हो गया और स्थिति शांतिपूर्ण है, हालांकि परिसर के बाहर पुलिस बल तैनात है। प्रदर्शन के दौरान छात्रों ने पुलिसकर्मियों पर पथराव किया, जिससे कई पुलिसकर्मी घायल हो गए और पुलिस को लाठीचार्ज करना पड़ा। पुलिस वाहनों पर भी हमला किया गया। एडीजीपी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में पुलिसकर्मियों ने रविवार देर रात परिसर में फरौग मार्च किया। पुलिस ने छात्रों की शिकायत पर एक अज्ञात व्यक्ति के खिलाफ दुकर्म का मामला दर्ज किया है और जांच के लिए एसआईटी गठित की है। लांक, विश्वविद्यालय प्रशासन ने परिसर में ऐसी घटना होने के दावे को अफवाह करार दिया है। छात्रों द्वारा सोशल मीडिया पर प्रसारित वीडियो में उन्हें खिड़कियों के शीशे और गमले तोड़ते तथा हम न्याय चाहते हैं के नारे लगाते देखा गया। एलपीयू ने छात्रों को मध्यावधि परीक्षाओं के स्थगित होने के बाद घर जाने की अनुमति दी है। परिसर में रहने वाले छात्रों को सुरक्षा के मद्देनजर छात्रवासों में रहने और किसी भी प्रदर्शन में शामिल न होने की सलाह दी गई है।

भगत सिंह का जज्बा भारत के नौजवानों की हिम्मत और हौसले का प्रतीक

पीएम नरेंद्र मोदी ने शहीद भगत सिंह की जयंती पर दी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली,(इंएमएस)। पीएम नरेंद्र मोदी ने शहीद भगत सिंह की जयंती पर श्रद्धांजलि देते हुए कहा कि राष्ट्र के सम्मान के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का भगत सिंह का जज्बा भारत के नौजवानों की हिम्मत और हौसले का प्रतीक है। पीएम मोदी ने सोमवार को एक्स पर पोस्ट में लिखा- शहीद भगत सिंह को उनकी जयंती पर कोटि-कोटि नमन। अपने अदम्य साहस और शौर्य से उन्होंने आजादी के आंदोलन को नई धार दी। राष्ट्र के सम्मान के लिए सर्वस्व न्योछावर करने का उनका जज्बा भारत के नौजवानों की हिम्मत और हौसले का प्रतीक है।

इसके साथ ही पीएम ने एक वीडियो संदेश भी शेयर किया। इसमें पीएम मोदी ने कहा कि अमर शहीद भगत सिंह हर भारतवासी, विशेषकर देश के युवाओं के लिए प्रेरणापुंज हैं। निर्भीकता उनके स्वभाव में कूट-कूटकर भरी है। देश के लिए फांसी के फंदे पर झूलने से पहले भगत सिंह ने अंग्रेजों को पत्र भी लिखा। पीएम ने कहा कि भगत सिंह ने कहा था कि आप मुझे और मेरे साथियों से युद्धबंदी जैसा व्यवहार करें।



इसलिए हमारी जान फांसी से नहीं, सीधा गोली मारकर ली जाए। यह उनके अदम्य साहस का प्रमाण है। उन्होंने कहा कि शहीद भगत सिंह लोगों की पीड़िता के प्रति भी बहुत संवेदनशील थे और उनकी मदद में हमेशा आगे रहते थे। मैं शहीद भगत सिंह को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। साल 1907 में 28 सितंबर को क्रांति के सर्वोच्च शिखर पर पहुंचने वाले क्रांतिकारी सरदार भगत सिंह का जन्म स्वतंत्रतापूर्व पंजाब में हुआ था। उन्होंने ताकत के बल पर आजादी दिलाने की ठानी थी और क्रांति के पर्याय बनकर अमर हो गए। जलियांवाला बाग हत्याकांड के समय भगत सिंह की उम्र 12 साल थी। साल 1920 में महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन से

प्रभावित होकर भगत सिंह ने स्कूल छोड़ दिया था और आजादी की लड़ाई में कूद पड़े। भगत सिंह ने साथी क्रांतिकारियों के साथ मिलकर लाला लाजपत राय के बलिदान का बदला लेने के लिए अंग्रेज अधिकारी सांडर्स को मारा था। इससे भगत सिंह पूरे देश में एक क्रांतिकारी की पहचान बन गए। 8 अप्रैल 1929 को उन्होंने बटुकेश्वर दत्त के साथ मिलकर इंकलाब जिंदाबाद का नारा लगाते हुए सेंट्रल असेंबली में बम फेंका था। बाद में भगत सिंह, राजगुरु, सुखदेव और अन्य क्रांतिकारियों पर मुकदमा चला। क्रांतिकारियों से भयभीत हुई अंग्रेजी सरकार ने 23 मार्च 1931 को भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव को फांसी दे दी।

पहले राज्यसभा जाएंगी फिर मंत्री बनेंगी स्मृति ईरानी, यूपी से राज्यसभा चुनाव की हलचल तेज

लखनऊ(ए)। उत्तर प्रदेश में प्रदेश कोटे की 10 राज्यसभा सीटों के लिए चुनाव प्रक्रिया 29 सितंबर से शुरू होने के साथ ही सियासी हलचल तेज हो गई है। भाजपा इस बार उम्मीदवारों के ऐलान में चौंका सकती है, क्योंकि उसकी योजना अधिकांश नए चेहरों को मैदान में उतारने की है। पार्टी की केंद्रीय महामंत्री स्मृति ईरानी को उत्तर प्रदेश से राज्यसभा भेजे जाने की प्रबल संभावना है, जो महिला प्रतिनिधित्व का भी महत्वपूर्ण कोटा पूरा करेगी। संभावना है कि उन्हें केंद्रीय कैबिनेट में जगह भी मिल जाए।

भाजपा इस बार यूपी से राज्यसभा सदस्य दो केन्द्रीय मंत्रियों समेत कुछ मौजूदा सांसदों को फिर से मौका देने को लेकर संशय में है। पार्टी ने डॉक्टर दिनेश शर्मा के अंडमान-निकोबार के उपराज्यपाल बनने के बाद इस्तीफे से खाली हुई बाह्यण कोटे की सीट पर हरीश द्विवेदी को उम्मीदवार बनाने पर विचार कर रही है, जिन पर केंद्रीय नेतृत्व का भरोसा बढ़ा है। यदि बीएल वर्मा का टिकट कटता है, तो राजवीर



चेहरे तलाश रही है। गीता की जगह उनके सजातीय ममताश शक्य सहित कई दावेदार रस में हैं, वहीं ओबीसी कोटे में पार्टी के ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष प्रकाश पाल भी मजबूत दावेदार हैं। दलित चेहरों में विद्यासागर की दावेदारी सामने आई है। भाजपा सामाजिक समीकरणों को साधने पर विशेष ध्यान दे रही है।

वर्तमान में इन 10 सीटों में से आठ पर भाजपा, एक पर समाजवादी पार्टी

(सपा) और एक पर बहुजन समाज पार्टी (बसपा) काबिज है। इस बार ये सीटें भाजपा और सपा के बीच ही बंटेंगी। बसपा के एकमात्र राज्यसभा सांसद रामजी गौतम का कार्यकाल खत्म होते ही संसद के उच्च सदन में बसपा का प्रतिनिधित्व शून्य हो जाएगा। पार्टी सूत्रों के अनुसार, भाजपा जल्द ही उम्मीदवारों के नामों को अंतिम रूप देने के लिए एक महत्वपूर्ण बैठक करेगी। पार्टी नेताओं का कहना है कि वे कैडर आधारित हैं और सभी प्रमुख नेताओं से सलाह लेकर ही अंतिम

निर्णय लिए जाते हैं। मौजूदा विधानसभा में संख्या बल के आधार पर भाजपा को सर्वाधिक सीटें मिलने की संभावना है। हाल ही में आगरा की फतेहाबाद सीट से भाजपा विधायक के निधन के बाद 403 सदस्यीय विधानसभा में भाजपा गठबंधन के 288 विधायक हैं, जिनमें भाजपा के 255 विधायक शामिल हैं। वहीं, सपा गठबंधन के पास लगभग 103 विधायक हैं।

महिलाओं की सुरक्षा से खिलावाड़ बर्दाश्त से बाहर, रेप की घटनाओं पर सुप्रीम कोर्ट सख्त

नई दिल्ली,(ए)। दिल्ली और एनसीआर में महिलाओं के खिलाफ लगातार बढ़ रहे यौन अपराधों पर सुप्रीम कोर्ट ने सख्त रुख अपनाया है। पार्क में हुए गैंगरेप और चलती स्लीपर बस में नाबालिग बच्ची से दरिद्रगी की घटनाओं को गंभीरता से लेते हुए सुप्रीम कोर्ट ने सोमवार को स्वतः सत्रांत लिया। जस्टिस जेबी पारदीवाला और जस्टिस के विनोद चंद्रन की पीठ ने दिल्ली-एनसीआर में बार-बार सामने आ रही ऐसी घटनाओं पर गहरी चिंता और पीड़ा जताई। कोर्ट ने साफ कहा कि दिल्ली में महिलाओं की सुरक्षा से खिलावाड़ अब बर्दाश्त से बाहर है और इस पर लगाम लगाने के लिए प्रशासन और पुलिस की जवाबदेही तय करना बहुत जरूरी हो गया है। अपने आदेश में बेंच ने दिल्ली के स्वरूप नगर में एक नाबालिग लड़की के गैंगरेप और हत्या का जिक्र किया, जहां पुलिस को एक खेत में पीड़िता की सड़ी-गली बाँड़ी मिली थी। ग्रेटर नोएडा से दिल्ली तक 47 किलोमीटर के सफ़र में चलती हुई स्लीपर बस में एक नाबालिग के साथ हुए सेक्सुअल असॉल्ट का उल्लेख करते हुए, जिसे पुलिस रोक नहीं पाई थी, कोर्ट ने कहा कि 'कोई भी 2012 के निर्भया कांड से इसकी दर्दनाक तुलना किए बिना नहीं रह सकता। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि इन घटनाओं से यह सवाल उठता है कि क्या निर्भया केस के बाद से कानून लागू करने वाले सिस्टम ने कोई खास तरक्की की है। बेंच ने कहा कि दिल्ली-एनसीआर में यौन अपराधों की हाल की दूसरी रिपोर्टों के साथ इन घटनाओं पर गौर करने से यह साफ पता चलता है कि कानून लागू करने वाली एजेंसियां ??और सरकारी अधिकारी आम लोगों की सुरक्षा की गारंटी देने में सिस्टम की नाकामी को साफ तौर पर दिखाते हैं।

सेना प्रमुख सेठ ने आर्टिलरी रेजिमेंट के साहस, सटीकता और समर्पण को सराहा

नई दिल्ली,(ए)। गनर्स डे के अवसर पर भारतीय सेना ने आर्टिलरी रेजिमेंट के सभी जवानों, पूर्व सैनिकों और उनके परिवारों को शुभकामनाएं दीं हैं। आर्टिलरी रेजिमेंट के साहस, सटीकता और समर्पण को नमन किया। थल सेनाध्यक्ष जनरल धीरज सेठ ने आर्टिलरी रेजिमेंट के साहस, सटीकता और समर्पण को नमन किया। इस अवसर पर भारतीय वायुसेना के सभी वायु योद्धाओं ने भी तोपखाना रेजिमेंट के 200वें स्थापना दिवस पर रेजिमेंट के सभी कर्मियों को हार्दिक शुभकामनाएं और बधाई दी। वहीं भारतीय सेना के सभी रैंकों ने भी आर्टिलरी रेजिमेंट को शुभकामनाएं दी हैं। इस अवसर पर सेना ने आर्टिलरी रेजिमेंट की उस भूमिका को याद किया, जिसमें सटीक निशाने, प्रचंड मारक क्षमता और अभियान को पूरा करने की अटूट प्रतिबद्धता के साथ गनर्स युद्धक्षेत्र में अहम भूमिका निभाते हैं। सेना के मुताबिक आर्टिलरी रेजिमेंट अपने समर्पण और पेशेवर क्षमता के साथ लगातार एक मजबूत युद्धक शक्ति के रूप में काम कर रही है। गनर्स डे हर साल 28 सितंबर को मनाया जाता है। यह दिन भारतीय सेना की तोपखाना रेजिमेंट की स्थापना की परंपरा से जुड़ा है। 28 सितंबर 1827 को पहली भारतीय तोपखाना इकाई के रूप में 5 बॉम्बे माउटेन बैटरी का गठन किया गया था।

